'सामाजिक ताना-बाना और स्वर्गवासी'

प्रशांत कुमार यादव
शोधछात्र
हिन्दी विभाग, सरदार पटेल,
विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर,
आणंद, गुजरात
9015656330
pkjm86@gmail.com

सारांश

साहित्य समाज का दर्पण होता है। समाज में मानव का प्रत्येक क्रिया-कलाप साहित्य का आधार बनाता है। साहित्य का क्षेत्र इतना व्यापक है कि परंपरा से चले आ रहे लोक कहावतें, लोक गीत, लोक मुहावरे, लोक नाट्य इत्यादि भी साहित्य के मूल अंग बन गए हैं। साहित्य मानव से आदि से लेकर अंत तक जुड़ा रहता है। यह मानव समाज को आईना दिखाने का काम भी करता है। जिसके कारण मानव अपने को संयमित रखते हुए अपना और समाज को उच्च आदर्श प्राप्त कराने के लिए प्रयत्नशील रहता है। प्रस्तुत शोध लेख (सामाजिक ताना-बाना और स्वर्गवासी) में इसी दृष्टि को ध्यान रखते हुए विचार किया गया है। दूधनाथ सिंह की महत्वपूर्ण कहानी 'स्वर्गवासी' कई मूलभूत एवं ज़रूरी प्रश्नों के साथ हमारे सामने रखती है और विचार करने को मजबूर भी करती है। यह शोध लेख इन्हीं सवालों पर विचार करता है।

बीज शब्द : स्वर्गवासी, कहानी, दूधनाथ सिंह,

भूमिका

दूधनाथ सिंह के कहानियों में ऐसे अनेक वर्णन हैं जो सामाजिक आयाम के अंतर्गत आते हैं। 'स्वर्गवासी' कहानी में कथाकार ने पुरानी पीढ़ी की समझौतावादी नीति का वर्णन किया है। कहानी में कथा नायक के विचार अपने जीजा के विचारों से मेल नहीं खाते। उनके जीजा नई पीढ़ी के खुले दिल के आदमी हैं। वे अक्सर अपने दोस्तों को खुश करने के लिए एवं प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए उनको खिलाते-पिलाते रहते हैं। कथा नायक को यह बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगती- "तभी जीजा उसकी ओर आँखे उठाकर देखते हुए मुस्कुराने लगते हैं। मजमे में शामिल होने का उनका यह मूक आमंत्रण उसके लिए असह्य हो जाता है, और इसके पहले कि उसका परिचय वे उन सभी चरित्र-रहित 'नकारा' 'शोहदो' लोगों से करा दे, वह एक झटके से पर्दा उठाकर कमरे से बाहर हो जाता है और जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर बहिन के पास चला जाता है।"[1]

कहानी में कथा नायक की नौकरी छूट जाती है उसके दफ्तर में छंटनी होती है और वह भी छंटनी का शिकार हो जाता है। उसके पिता उसको जीजा के पास भेजते है और भेजते वक्त कहते है कि वहाँ अधिक समय रुकना मत, इस बात को लेकर उसको अपने पिता पर चिढ़ होती है। यह चिढ़ पिता के असहायता प्रगट करने को लेकर भी है जो पीढ़ीगत द्वन्द्व को दिखाता है। जिसका वर्णन कथाकार ने इस प्रकार किया है- "चलते वक्त पिता ने हिदायत दी थी

कि जाकर सीधे जीजा से कहना बहाने मत बनाना। कहना वे खुद तुम्हें लेकर लखनऊ चले जाय और काम करा लाएँ। तुम वहाँ टालमटोल मत करना और काम के बाद तुरंत घर चले आना रुकना मत। पिता ने रुकना मत पर ज़ोर दिया तो उसे लगा कि कोई चीज उससे जबरदस्ती छिन ले रहे है..... भीतर एक अपराध-भाव महसूस होने लगा। अब यही परेशानी है- वह शिकायत के लहजे में बुदबुदाता।"[२]

यहाँ एक प्रकार का सामाजिक समझौता है, जो पुरानी पीढ़ी के साथ नई पीढ़ी उनके विचारों, रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं से समझौता करती नजर आ रही है पुरानी पीढ़ी भी कभी-कभी नई पीढ़ी के साथ समझौता करती नजर आती है। यह समझौता सामाजिक सम्बन्धों को बनाए रखने के लिए करना ही पड़ता है। समझौता के अभाव में सामाजिक समरसता टूटने लगती है और समाज का विघटन प्रारम्भ हो जाता है।

एक पत्नी के लिए उसका पति सर्वस्व होता है। पति के रहते पत्नी कभी भी किसी वस्तु की कमी नहीं महसूस करती है। और माँ तो सर्वथा पूजनीय होती है। माँ अपने बच्चों को हमेशा प्यार करती है लेकिन इस कहानी में ऐसा कुछ नहीं है। यह वर्तमान जीवन की कहानी है इस कहानी में न वो प्यार करने वाली माँ और न ही पति को सर्वस्व मानने वाली पत्नी ही है। कहानी में पारिवारिक विखंडन को कथाकार ने उठाया है जो सामाजिक आयामों का एक उदाहरण ही कहा जा सकता है। इसका कथा नायक अपनी पत्नी से घृणा करने लगता है, क्योंकि उसको अधिक बच्चे पैदा हो गए हैं। जिसके कारण वह पहले जैसी सुंदर नहीं रह गई है और उसका आकर्षण अब समाप्त हो चुका है- "फिर उसे पत्नी का ख्याल आया। ज्यादा बच्चे हो जाने की वजह से उसके दांत फैल गए थे और बाहर निकल आए थे। कोशिश करके वह होंठ बंद करती तो उसका मुंह पोपला हो जाता, फिर भी एक दांत होंठो के बाहर झाँकता रहता उसे घिन सी लगती और..... अब यही तो परेशानी है ससुरी..... बुदबुदाहट की फिर आवृत्ति"[3]

हमारे भारतीय संस्कृति में पत्नी को घर की लक्ष्मी माना जाता है। पत्नी का आपमान किसी पुरुष को नहीं करना चाहिए। इस कहानी में कथाकार कथानायक को चारित्रिक रूप से दुर्बल दिखाया गया है क्योंकि वह अपनी पत्नी का अपमान करता है। अधिक बच्चे पैदा करने का जिम्मेदार वह खुद है लेकिन इसका भी उत्तरदायित्व वह अपनी पत्नी पर डाल देता है- "चलते वक्त पत्नी की ओर देखकर मुस्कराया वैसे पत्नी पर उसका कोई असर नहीं पड़ा। उसके लिए वह सारे विवाहित जीवन में तूफान की तरह आता है और ओला, पानी बरसा कर शांत भाव से मुस्कुराता हुआ चला जाता था। इसी तरह उसने छ संतानें पैदा की और सातवाँ आने वाला था।"[4]

कथाकार ने इस कहानी में पुरुष समाज को आड़े हाथ लिया है जो अपनी पत्नी को कामवासना की तुष्टीकरण का साधन मात्र मानते हैं। "स्वर्गवासी में केंद्रीय पात्र नैतिकता विहीन अर्कमण है।"[5] कथानायक पूरी कहानी में अपनी पत्नी के प्रति बेरुखी का व्यवहार करता है। वह पत्नी को नहीं चाहता। पत्नी को इसलिए घर में रखता है क्योंकि उसकी आवश्यकता की पूर्ति उससे होती है जो एक सामाजिक समस्या के रूप में दिखाई देती है।

'स्वर्गवासी' कहानी का नायक श्रीकृष्णलाल वर्तमान व्यवस्था से त्रस्त है। यह व्यवस्था उसे बेरोजगार बना देती है बेरोजगारी में उसे पारिवारिक, आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है। वह दुबारा नौकरी प्राप्त करने के लिए अपने जीजा की सिफ़ारिश लगता है। घर में पत्नी बीमार है दवाइयों के लिए पैसे की आवश्यकता है। संकोच में वह इस समस्या को किसी से न कहकर अपने आप से लड़ा करता है। उसको अपने प्रति और व्यवस्था के प्रति झल्लाहट होने लगती है- "जीजा से कहना तो पड़ेगा ही हाँलाकि वह कुछ भी नहीं कह पाता जो बात कहने के लिए वह 15

दिनों तक यहाँ आकर पड़ा हुआ है वही नहीं कर पाता। बहिन के कानों में वह कई बार डाल चुका है वह सर नीचा कर लेती है.....। यह बहिन भी अब नाक-भौं सिकोड़ने लगी है। अब मैं क्या करू? मैं ही अकेले थोड़ी उस छटनी वालों में था। और मुझे कुछ भी नहीं होता..... मैं बीमार नहीं पड़ता.... तो इसमें मेरा क्या दोष। और कैसे कुछ नहीं होता? ये लोग यहाँ से वहाँ तक मुझे कम परेशान किए हुए है। अब परेशानी का दावा कैसे किया जाय। क्या मैं मर जाऊँ या अपना अंगभंग कर लूँ, या भोजन न करूँ.....?"[6]

आधुनिक पारिवारिक समस्या को कहानी के माध्यम से लेखक द्वारा उकेरने का प्रयास किया गया है कथाकार आर्थिक और पारिवारिक समस्याओं को भी साथ लेकर चल रहा है। समस्या के समाधान के लिए कोई रास्ता नहीं दिख रहा है। वह दिन-रात इसी अंतर्द्वन्द्व में घिस रहा है। इन सब समस्याओं के कारण पारिवारिक विखंडन हो जाता है, परिवार टूट जाता है, उसका विखराव हो जाता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद पारिवारिक संबंध सबसे अधिक प्रभावित हुए है। वर्तमान समय में परिवार में पश्चिम की तरह संबंधो की आत्मीयता बहुत कम देखने को मिलती है। कथानायक के जीजा आधुनिक समाज के समाज के व्यक्ति है। वह अपने काम के चक्कर में अपने परिवार का कोई ध्यान नहीं देते है। उसका परिवार परेशान है- "जीजा जी! कभी दिल्ली, कभी इलाहाबाद, लखनऊ, बनारस, बंबई.....इससे मुकदमा.....उससे दुश्मनी। इसका काम मुक्त में कर दिया, उसे रखकर साल भर मुफ्त में खिलाते रहे। लंगर खोले रहते है और शाम को? भैया! दवा लाओ रामू दवा लाओ, साले साहब! जरा तुम्ही जाओ। हड़हे होते चले जा रहे हो। अपनी तंदुरुस्ती का ख्याल ही नहीं। यह नहीं कि चुप-चाप खाये और आराम से पड़े रहे। लेकिन भाग्य में आराम बदा हो तब न।.....और ये लड़कियां! ये तो हमारे कुल.....।"[7]

भारत में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद धीरे-धीरे हमारे सामाजिक संबंध टूटने लगे है। आज वह समाज नहीं रहा जो पहले हुआ करता था। प्रबुद्ध लोग सभी समस्याओं का निराकरण किया करते थे। समाज के लोगों में मान-अपमान शिक्षा-दीक्षा दिया करते थे। परिवार के वरिष्ठ लोगों का परिवार के प्रति लगाव होता था। वह परिवार के दु:ख-सुख में बराबर की हिस्सेदारी किया करते थे। लेकिन वर्तमान समय में आज वह समाज एवं उसकी परंपरा रीति-रिवाज एवं संस्कृति नहीं रह गयी है। आज हमारा समाज भारतीय संस्कृति एवं परंपरा का उल्लंघन कर पाश्चात्य संस्कृति को अपना आदर्श बनाती चली जा रही है। जिससे समाज का विघटन हो रहा है। समाज में भ्रष्टाचार, रिश्वतख़ोरी, चोरीबाज़ारी, तश्करी इत्यादि बढ़ता जा रहा है। इन सब के कारण हमारे समाज और परिवार पर बुरा असर पड़ रहा है जिसके कारण हमारे सम्बन्धों में तनाव बढ़ रहा है और हमारे रिश्ते टूट रहे हैं। कोई किसी से लगाव नहीं रखना चाहता जिसके कारण एकांकी परिवार की कल्पना बढ़ रही है। कहानीकार इस विषय को माध्यम बनाकर जनमानस को संदेश देने का प्रयास किया है।

दूधनाथ सिंह की कहानियों के बारे में कहा जाता है की इनकी कहानियों में फ्रायड के मनोविश्लेषण सिद्धांत का प्रभाव है। 'आपकी प्रारंभिक कहानियों में फ्रायडियन प्रभाव दिखता है, उन कहानियों को आज आप किस तरह देखते हैं?' जबाब में वे कहते हैं- "जिसे तुम फ्रायडियन तत्व कहते हो, उस तरह का मनोविश्लेषणवाद और सबकांशस का विश्लेषण इन कहानियों में नहीं है। वो एक निश्चित सामाजिक दौर की उपज हैं और नई कहानी आंदोलन की प्रवृत्तियों से बिल्कुल अलग हैं।"[8] जाहिर है कि दूधनाथ की कहानियों में फ्रायडियन प्रभाव सामाजिक और पारिवारिक संबंध को दर्शाने के संबंध में आया है न की वः उनका इष्ट है। "दूधनाथ सिंह की कहानियों में मनोवैज्ञानिक

तत्व एक सहयोगी तत्व के रूप में हो सकता है, लेकिन ऐसे किसी सिद्धांत के पोषक के रूप में उनकी कहानियों को सीमित कर देना कहानी की व्यापकता को रिड्यूस करना होगा।"[9]

निष्कर्ष (Conclusion)

दूधनाथ सिंह बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार हैं। उनकी 'स्वर्गवासी' कहानी में आजादी के मूल्यों का विखंडन, पारिवारिक विखंडन, पीढ़ीगत द्वन्द्व, बेरोजगारी और आर्थिक समस्या की अभिव्यक्ति हुई है। दूधनाथ में मध्यवर्गीय समस्यायों, बुराइयों एवं अच्छाइयों को व्यक्त करने का अपना अंदाज़ था। उनकी कहानियाँ उस दौर की दस्तावेज़ है। यदि हमें 60 के दशक का सामाजिक इतिहास जानना हो तो दूधनाथ के साहित्य से गुजरना ही होगा। 'स्वर्गवासी' कहानी इसका एक जीता-जागता उदाहरण है।

संदर्भ

1. दूधनाथ सिंह, 1972, सुखांत, रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 15

2. वही, पृ. 16-17

3. वही, पृ. 17

4. वही, पृ. 16

5. राजीव कुमार, समय और संबंध का अँधेरा : दूधनाथ सिंह की साठोत्तरी दौर की कहानियाँ, http://www.hindisamay.com/

6. दूधनाथ सिंह, 2006, कथा समग्र, रेमाधव प्रकाशन, गाज़ियाबाद, पृ. 173

7. वही, पृ. 174

8. दूधनाथ सिंह, 2005, कहा-सुनी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 125

9. राजीव कुमार, समय और संबंध का अँधेरा : दूधनाथ सिंह की साठोत्तरी दौर की कहानियाँ, http://www.hindisamay.com/